सुथरे शाह जी का गोरखनाथ जी के मन्दिर पर ध्वजारोहण कर विलुप्त होना

> जिन प्राणियों ने सत्वगुणियों के परमाराध्य श्री हरि को अपने हृदय में धारण कर लिया है, उन महात्मा साधुओं के लिए भला कौन सा कार्य दुष्कर है और ऐसा कौन सा त्याग है जिसे वे नही कर सकते हैं? वे सब कुछ त्यागने व करने में समर्थ हैं।
>
> 'श्रीमद्भागवत'

सन्त की दिव्यता को समझ पाना आसान नही। वास्तव में सन्त प्राणिमात्र का कल्याण करने के लिए ही इस धरती पर जन्म लेते हैं व अपनी इच्छा से ही भौतिक शरीर का त्याग कर पारब्रह्म में लीन हो जाते हैं। ऐसे सन्तों की न कोई जाति होती है न कोई वर्ण। सारी वसुधा ही उनका परिवार होता है। वे अपनी इच्छा से संसार में लीला करते हैं व अपनी इच्छा से संसार को छोड़कर चले जाते हैं। उनकी प्रत्येक क्रिया संसार के लिए आदर्श होती है। उनके जीवन में अलौकिक घटनाएँ घटती रहती हैं। जिन पर कुतर्कवादी लोग विश्वास नहीं करते। सच बात तो यह है कि लगातार ईश्वर का स्मरण करने से, उनका नाम लेने से संतों में सर्वज्ञता, सर्वसमर्थता आदि गुण स्वतः ही आ जाते हैं।

जो भगवान का नाम पत्थरों को भी तार देता है उस नाम के उलटे जाप से डाकू भी महर्षि वाल्मीकि बन गए व रामायण जैसे महाकाव्य की रचना करने में समर्थ हुए। उस नाम का निरन्तर स्मरण करने वाले सुथरे शाह जी जैसे संत कोई अलौकिक कार्य कर देते हैं तो क्या आश्चर्य?

बाबा रज्जाल शाह जी ने एक रात स्वप्न में देखा कि एक दिव्य पुरुष बेलपत्र, पुष्प, केसर तथा अक्षत आदि से थाली को सजाए हुए दीपक प्रज्ज्वलित कर भगवान शिव की आराधना कर रहे हैं। उनकी दिव्याभा से सारा वातावरण आलोकित हो उठा है। सहसा उन्होंनें देखा कि वह दीपक की लौ 'अग्नि' भगवान शिव में विलीन हो गई है। वे दिव्य पुरुष और भगवान शिव एकाकार हो गए हैं। सर्वत्र अंधकार छा गया है। धरती बिलख रही है। गाय, पशु, पक्षी, सब उदास हैं। सभी उस महान पुरुष को रोकना चाह रहे हैं किन्तु वह दिव्य पुरुष कहाँ अन्तर्ध्यान हो गया, कहाँ विलुप्त हो गया? कुछ पता नहीं।

बाबा रज्जाल शाह जी इस स्वप्न को देखकर उठ कर बैठ गए। उनका सारा शरीर पसीने से तर हो उठा। उन्हें आभास हो गया कुछ अनहोनी होने वाली है। बाबा सुथरे शाह जी भी उनके पास ही सो रहे थे। उनकी भी नींद खुल गई। उन्होंनें बड़े प्यार से पूछा, 'क्या बात है 'निहाले' (बाबा रज्जाल शाह जी को वह प्यार से निहाला कहते थे) सब ठीक तो है।' रज्जाल शाह जी ने स्वप्न का सारा वृतान्त बाबा जी को कह सुनाया। उस समय उनका दिल जोरों से धड़क रहा था।

बाबा सुथरे शाह जी उठ कर बैठ गए। वे मन ही मन मुस्कुराने लगे। उन्होंनें रज्जाल शाह जी का मुख चूमा व उन्हें अपने गले से लगा लिया। वे कितनी देर तक उनकी पीठ व सिर पर हाथ फेरते रहे। तब बाबा रज्जाल शाह जी को ऐसा लगा मानो जन्मजन्मान्तरों की उनकी वासनाएँ समाप्त हो गई हों व बाब जी ने अपने कन्धे पर उनके पाप की गठरी का भार उठा लिया हो। उनके अंतः करण से मल विक्षेप के आवरण दूर हो गए। उन्होंनें रज्जाल शाह जी को अपने पास ही लिटा लिया। बड़ी देर तक उनकी पीठ को

सहलाते रहे। उनका सारा शरीर रोमांचित हो उठा। उन्होंने उनकी आध्यात्मिकता को जग कर उन्हें उनकी अन्तरात्मा में स्थित परमात्मा का अलौकिक अनुभव कराया। उनके अन्दर आनन्द का स्त्रोत फूटने लगा। उनके मुख से एक शब्द भी नहीं निकल रहा था। उस समय उनके हृदय की जो विचित्र अवस्था थी उसका वर्णन करना कठिन है। इस प्रकार बाबा सुथरे शाह जी ने अपनी समस्त शक्तियों को बाबा रज्जाल शाह में सम्प्रेषित कर प्राण अनुदान दिया।

फ्रन्टियर पेशावर के पास एक नाथ सम्प्रदाय का विशाल मठ है। वहाँ प्रतिवर्ष उस मठ पर ध्वजारोहण हुआ करता था। मठ की ऊँचाई बहुत अधिक थी। वहाँ पर उत्सव के दिन भारी संख्या में लोग उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त अनेक साधु, संत तथा लगभग नौ हजार के करीब योगी भी एकत्रित थे। तभी नाथ मठ के मठाधीश ने एक प्रस्ताव रखा कि कोई अपनी योग शक्ति से ऊपर उठ कर गुम्बद पर ध्वजारोहण करे। यह सुनकर सभी योगी जन एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। किसी योगी में इतनी शक्ति नहीं थी जो आकाश में पहुँच कर ध्वजारोहण कर सके।

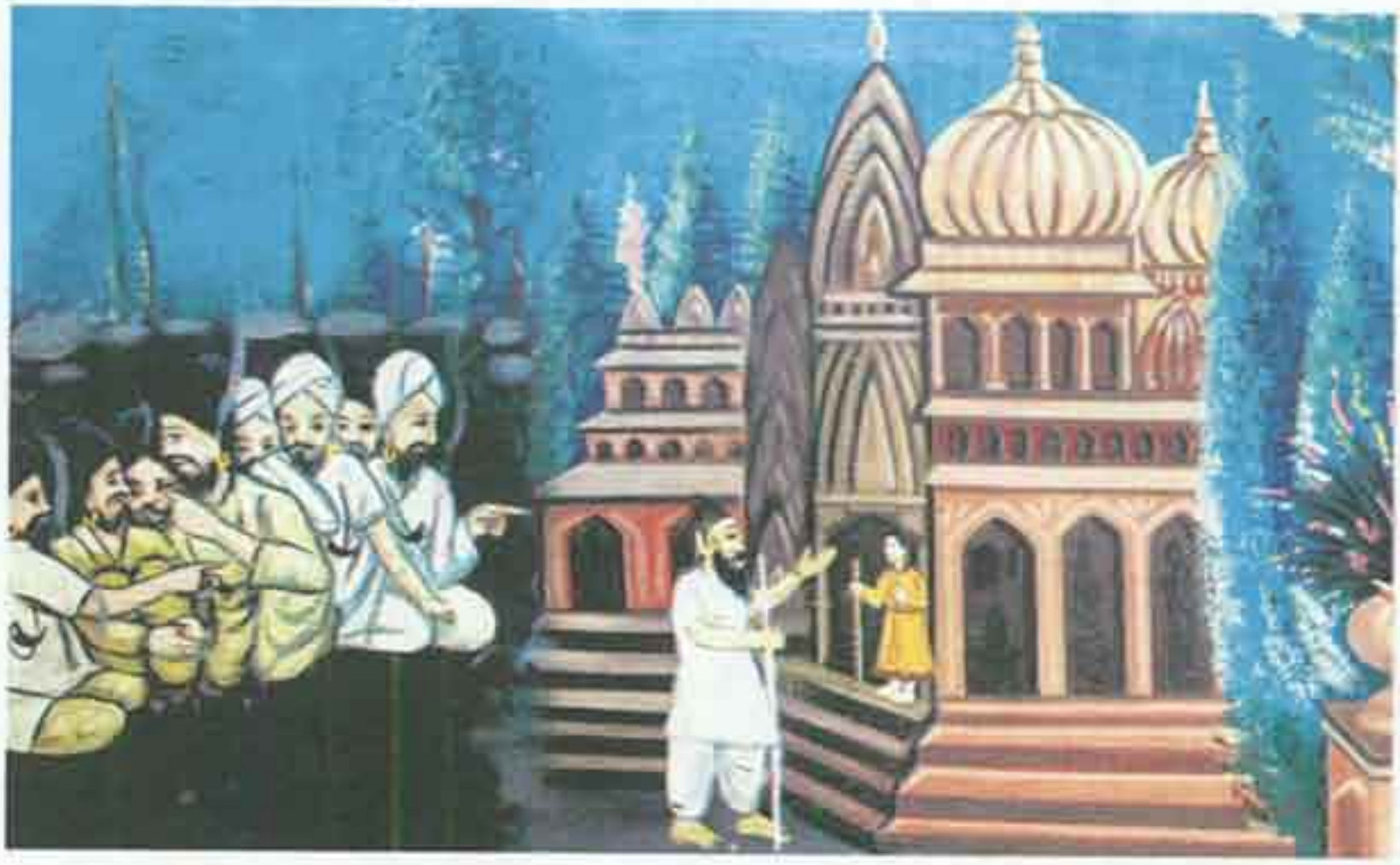

उस उत्सव में योगियों के योगी बाबा सुथरे शाह जी भी उपस्थित थे। वे भी देख रहे थे किसमें इतनी शक्ति है जो गुम्बद पर पहुँच कर ध्वजारोहण कर सके। जब सब निराश हो गए तो सुथरे शाह जी उठे। उन्होंने अपने गुरु श्री चन्द्र जी 'जो साक्षात् शिव का अवतार थे' का स्मरण किया। अपने गले से सेली उतारी व माता नैना देवी द्वारा प्रदत्त डण्डा हाथ में लेकर पवन रूप

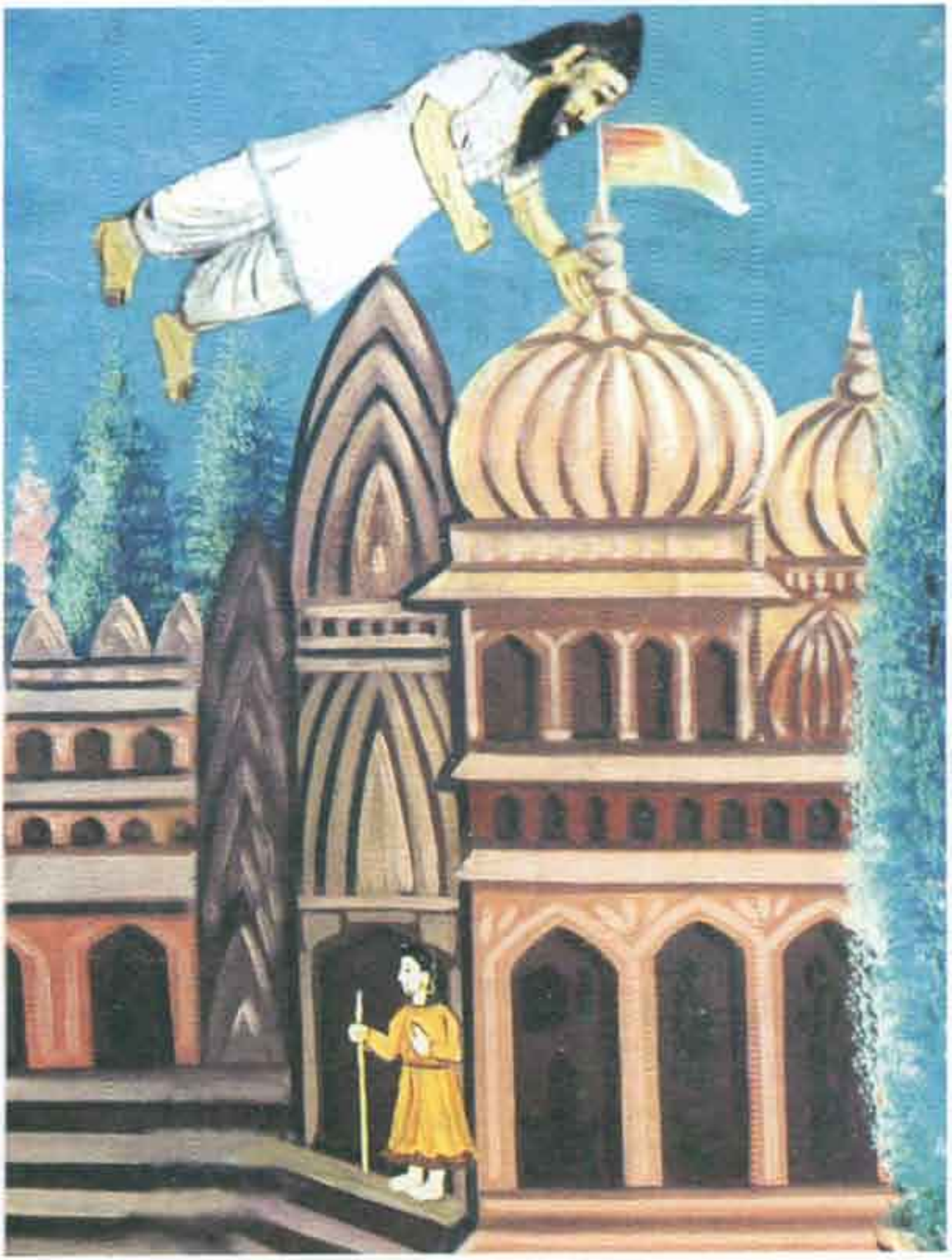

धारण कर सीधा गुम्बद पर पहुँच गए। उस समय उनके पास ध्वजा नहीं थी। उन्होंनें अप्ने गले से गम्छा (परना) उतार कर गुम्बद पर ध्वजारोहण किया। सभी योगी जन व जनसमुदाय आश्चर्यचकित रह गए। उनमें कुछ तांत्रिक भी थे। उन्होंने आपस में परामर्श किया कि जब ये नीचे आ जाए तब उन्हें काट कर पका कर खा लेंगे जिससे हम में भी ऐसी योग शक्ति पैदा हो जायेगी। सुथरेशाह जी उनका मनोभाव जान चुके थे। वे वहाँ से पवन रूप धारण कर अदृश्य हो गए तथा अपने असली रूप अग्नि में विलीन हो गए। इसके पश्चात् किसी को उनके दर्शन नहीं हुए।

इस प्रकार भाद्रपद की अमावस्या की काली भयंकर अंधकारमयी रात को पूर्णिमा का यह चन्द्रमा सर्वत्र ज्ञान का प्रकाश फैलाकर स्वयं विलुप्त हो गया।

उनकी स्मृति में हर वर्ष भाद्रपद की अमावस्या को सुथरे शाह मन्दिर में एक मेले का आयोजन किया जाता है। जिसमें सभी सुथरे शाही संत एवं उदासीन सम्प्रदाय के संत एकत्रित होते हैं। यह मेला तीन दिन पहले से ही शुरू हो जाता है जिसमें अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

अमावस्या के दिन प्रातः यज्ञ के उपरान्त ध्वजारोहण होता है तत्पश्चात् संत सम्मेलन होता है। ठीक बारह बजे सभी सुथरे शाही संत डण्डे पर डण्डा बजाते हुए दरबार में आते हैं व अपने श्रीमहन्त गुरु महाराज का पूजन करते हैं व गाते हैं –

आठों पहर जय धर्म दी आठों पहर जय ।